गंगा

अनुक्रमणिका

१. 'गंगा' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ	५
२. ब्रह्मांडमें गंगा नदीकी उत्पत्ति एवं भूलोकमें उनका अवतरण	५
३. गंगाजीके कुछ अन्य नाम	७
४. विशेषताएं	८
५. गंगाजीका महत्त्व	१८
६. हिंदू जीवनदर्शनमें गंगोदकका स्थान	२०
७. गंगातटके तीर्थस्थल	२१
८. गंगास्नान तथा उसका महत्त्व	२५
९. गंगापरिवार	३०
१०. मूर्तिविज्ञान	३०
११. श्रद्धालुओंके लिए आवश्यक गंगासंबंधी व्यष्टि साधना	३१
१२. श्रद्धालुओंके लिए आवश्यक गंगाजीसंबंधी समष्टि साधना	४३
१३. भावी हिंदू राष्ट्रमें गंगा नदी परम पवित्र होगी !	४७

भूमिका

पुण्यसलिला गंगाकी महिमा अपरंपार है ! भौगोलिक दृष्टिसे गंगा नदी भारतवर्षकी हृदयरेखा है ! इतिहासकी दृष्टिसे प्राचीन कालसे अर्वाचीनकालतक तथा गंगोत्रीसे गंगासागरतक गंगाकी कथा हिंदू सभ्यता एवं संस्कृतिकी अमृतगाथा है । राष्ट्रीय दृष्टिसे भिन्न आचार-विचार, वेशभूषा, जीवनपद्धति एवं जातियोंसे युक्त समाजको एकत्रित लानेवाली गंगा नदी हिंदुस्थानकी राष्ट्रीय-प्रतीक ही है । धार्मिक दृष्टिसे इतिहासके उषःकालसे कोटि-कोटि हिंदू श्रद्धालुओंको मोक्ष प्रदान करनेवाली गंगा विश्वका सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है । आध्यात्मिक क्षेत्रमें जो स्थान गीताका है, वही स्थान धार्मिक क्षेत्रमें गंगाका है । प्रस्तुत ग्रंथमें प्रमुखरूपसे गंगा नदीकी महिमा वर्णित की गई है ।

गंगा नदी सर्वदेवमयी, सर्वतीर्थमयी, सरित्श्रेष्ठा और महानदी तो है ही; परंतु 'सर्वपातकनाशिनी', उसकी प्रमुख पहचान है । जगन्नाथ पंडित गंगा नदीसे प्रार्थना करते हुए कहते हैं, 'जलं ते जम्बालं मम जननजालं जरयतु ।' अर्थात् हे गंगामाता ! शैवाल (काई) एवं कीचडसे युक्त आपका जल मेरे पाप दूर करे । (गङ्गालहरी, श्लोक २०)' प्रत्येक हिंदू अपने जीवनमें न्यूनतम एक बार पतितपावन गंगामें स्नान करनेकी अभिलाषा रखता है । हिंदू धर्मने 'गंगास्नान'को एक धार्मिक विधि माना है । यह विधि सुलभतासे कर पाने हेतु, प्रस्तुत ग्रंथमें 'गंगास्नानविधि' एवं 'गंगापूजनविधि'का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है ।

गंगा नदीके सर्व तट तीर्थस्थल बन गए हैं तथा वे हिंदुओंके लिए अतिवंदनीय एवं उपासनाके लिए पवित्र सिद्धक्षेत्र ही हैं । उनकी महिमा भी इस ग्रंथमें विशद की है । धर्माचार्योंने यह सत्य स्वीकार किया है कि गंगादर्शन, गंगास्नान एवं पितृतर्पणके मार्गसे मोक्ष साध्य किया जा सकता है ।

गंगाजीके उपासकद्वारा की जानेवाली व्यष्टि एवं समष्टि साधनाके विषयमें इस ग्रंथमें विस्तृत मार्गदर्शन किया गया है । श्री गंगादेवीके चरणोंमें प्रार्थना है कि ग्रंथ पढकर सुरसरिता गंगाजीके प्रति श्रद्धालुओंका भाव जागृत हो तथा उन्हें भावपूर्वक गंगाजीकी उपासना करनेकी प्रेरणा मिले !

- संकलनकर्ता